स्मृति शेष

प्रोफेस मैनेजेर पांडेय का निधन- हिंदी साहित्य के एक युग का अवसान।

हिंदी साहित्य जगत के गम्भीर और विचारोत्तेजक आलोचनात्मक लेखन के लिए प्रसिद्ध वरिष्ठ लेखक मैनेजर पांडेय का निधन 8 नवंबर 2022 को हो गया । 82 वर्षीय मैनेजर पांडेय के निधन से हिंदी साहित्य जगत में एक बहुत बडा वैक्युम निर्माण हो गया है। मैनेजर पाण्डेय का जन्म 23 सितंबर1941 को बिहार के गोपालगंज जिले के लोहटी में हुआ था। वे हिंदी में मार्क्सवादी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक रहे हैं। गम्भीर और विचारोत्तेजक आलोचनात्मक लेखन के लिए उनकी अलग ही पहचान थी। मैनेजर पांडेय की उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। हिंदू यूनिवर्सिटी से उन्होंने एम. ए. और पीएच. डी. की उपाधियाँ प्राप्त की थीं। उन्होंने बरेली कॉलेज, बरेली और जोधपुर विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। इसके बाद मैनेजर पाण्डेय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर और जे.एन.यू में भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष भी रहे। आलोचक मैनेजर पाण्डेय लोक जीवन से गहरे संपृक्त व्यक्ति थे। वे तुलसीदास से अधिक प्रेरित व प्रभावित थे। मैनेजर पांडेय ने आलोचनात्मक अनुसंधान के माध्यम से साहित्य के इतिहास लेखन में नई कड़ियों को जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया। मैनेजर पांडेय की प्रमुख कृतियां हैं शब्द और कर्म, साहित्य और इतिहास दृष्टि,भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, आलोचना की सामाजिकता, उपन्यास और लोकतंत्र, हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान, भारतीय समाज में प्रतिरोध की परम्परा, साहित्य और दलित दृष्टि, शब्द और साधना।

मैनेजर पांडेय उन आलोचकों में से थे जिन्होंने तय शुदा समीक्षा सिद्धान्तों का अनुसरण न कर रचना को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने परखने की अपनी एक विशिष्ट सद्धान्त शैली का निर्माण किया । तभी तो वे सुरदास के काव्य का एक अलग पक्ष हमारे सामने रख कर हमारी सोच को एक नई दिशा दे सकें। मैनेजर पांडेय उन गिने चुने आलाचकों में से थे जिन्होंने अपने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। उनका मानना है कि साहित्य विनोद का साधन नहीं है, वह स्वतंत्रता के लिए बेचैन आत्मा की पुकार है। इस साहित्य की व्याख्या में वही आलोचना सक्षम होगी जो स्त्रियों, दलितों और आदिवासियों की स्वतंत्रता की आकांक्षा की पहचान करेगी और उनके रचने की सामाजिकता का मूल्यांकन करेगी। उनकी दृष्टि में आलोचना की यह जिम्मेदारी है कि वह साहित्य में बेहतर लोकतंत्र की स्थापना के लिए रचना में सामाजिक संघर्षों और मानवीय स्वतंत्रता के लिए की जा रही जद्दोजहद की आगे बढ़ कर पड़ताल करे और सहमतिवाद की गतानुगतिक लीक से अलग हट कर प्रतिरोध का मंच बने।

मैनेजर पांडेय वामपंथी आलोचक होने पर भी वे रचना में सामाजिकता के पक्षधर थो। मैनेजर पांडेय उन कवियों पर विशेष बल देते थे जिनकी रचना बौद्धिकता में ही घिर कर नहीं रह जाती बल्कि जनता के सुख-दुख से अपना नाता जोड़ती है। उनके लिए कविता वह है जिसमें समाज का प्रतिबिम्ब दिखे, समाज का क्रिटीक

दिखे और वह जनरुचि का सम्मान भी करे। अतः कहा जा सकता है कि वे ऐसी रचना के हिमायती रहे हैं जो संप्रेष्य हो, जनसंवेद्य हो तथा उसका अपना सामाजिक नजरिया हो। इस अर्थ में वे समाज की विडंबनाओं पर दृष्टिपात करने वाले आलोचकों में सर्वाधिक प्रखर थे। मानवता, सहजता, मनुष्यता, संवेदनशीलता, आत्मीयता यह पांडेय जी की आलोचना के बीज शब्द रहे हैं।

समकालीन हिंदी आलोचना के शिखर आदरणीय प्रोफसेर मैनेजर पांडेय का निधन हिंदी आलोचना की बडी क्षति है। प्रोफेसर मैनेजर पांडेय जी ने साहित्य पर विचार करने के लिए नए सूत्र दिए। मध्यकाल से लेकर अद्यतन लेखन पर उन्होंने बेबाक लिखा। उनका जाना एक विद्वान शिक्षक का जाना है। तेजस्वी वक्ता का जाना है। साहित्य में एक युग का अवसान होना है । समस्त आखर परिवार मैनेजर पांडेय जी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सादर नमन।

"आखर" हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका का छठा अंक आज आप सभी सुधि पाठकों के सम्मुख रखते समय हर्ष का अनुभव हो रहा है। आखर के इस अंक में इस बार शोधालेख, कहानी, कविता, साक्षात्कार तथा पुस्तक समीक्षा आदि का समावेश है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

(प्रधान संपादिका)